यह गीतात्मक कविता एक ऐसी कृषक बाला का शब्दचित्र है जो मुद्रित अक्षरों की दुनियां से परे सिर्फ मौखिक संवाद पर निर्भर है । कवि से उसका वार्तालाप जीवन के क्रियाशील संघर्ष की गरिमा को प्रतिष्ठित करता है । कृषक बाला की सहज बातें उसके व्यक्तित्व की ऐसी संभावनाओं को संकेतित करती हैं, शिक्षा जिन्हें प्रस्फुटित कर सकती थी ।

मुलाकात

❑ सुदर्शन पानीपती

खेत की मेंड पर नाचती कूदती
लाज से झेंपती, बिदकती, फुदकती
अधफटी ओढ़नी से बदन ढांपती
सांवली, शोख, नटखट, किलकारती
जोर से गोफिये को घुमाती हुई
पक्षियों को उड़ाती, अचानक मुझे
एक लड़की मिली थी नगर से परे

एक अंजान-सा आदमी देखकर
कुछ झिझकते हुए पूछ बैठी कि मैं
बस्तियों से परे खेत खलिहान में
किसलिए रोज खामोश औ' उन्मना
घूमता हूं यहां सिरफिरों की तरह

मैं हंसा और बोला कि बेटी सुनो
एक शायर हूं मैं घूमता हूं यहां
जिन्दगी के लिए सुर्खियां ढूंढ़ता
बात मेरी सुनी और उसने कहा
शायरी छोड़, आ कंकरों को उठा
गोफिया सरसरा, पक्षियों को उड़ा
धान की बोरियों से दबा भूख को
भूख से जंग लड़, भूख को कत्ल कर
भूख के खून में तैरती पायेगा
अनगिनत सुर्खियां, जिन्दगी के लिए

गजब अंदाज से गोफिये को लिये
खेत की मेंड पर वह सरकती गई
और मेरा कलम कसमसाता हुआ
हाथ से छूटकर खेत की रेत में
बन कुदाली बड़े जोर से गड़ गया ।